INDEX

Name : MAMTA Kumari .... Roll No. .... University Roll No. ....

Title : ....

S. No.	Topic	Page No.	Date	Teacher's Sign Remarks
01	Drama and Art	2		
02	सांस्कृतिक क्रियाएं	8		
03	मनोरंजनात्मक क्रियाएं	10		
04	Drama के अंग	20		
05	अभिनय अभिव्यक्ति की विभिन्न शैलियां	26		Manju

The ART of Education
improv
acting
play
stage
performer
support
lights
critic
body
expression
arts
perform
program
student
art
historian
creativity
drama
form
positive
students
risk
fine
ensemble
amatic
development
imagination
novement
situation growth
character
voice
partly music
involved

Drama and Art Drama (सम्प्रेषण एक कला) :—

Drama मूलरूप से प्राकृति का अनुकरण है हालांकि लेकिन जब इसमें सौंदर्य के तत्व की कल्पना शीलता के साथ सम्मिलित होते हैं तो यह कला का रूप धारण करता है।

चेतना का विकास के साथ-साथ मानव में तर्कशक्ति का भी विकास किया है और उन्हें तर्कशील बना दिया है।

Mother's Day Celebration

★ **Darma (सम्प्रेषण की कला) :-** मनुष्य में आदिकाल से ही स्वयं को एक सामूहिक प्राणी के रूप में विकास हुआ है। अतः पारस्परिक निर्भरता उसके अस्तित्व के लिए अत्यंत आवश्यक है।

परिणाम स्वरूप पारस्परिक सम्प्रेषण भी उतना ही आवश्यक है। चेतना के अतिरिक्त विकसित रूप से पूर्व जब किसी एक संगठित भाषा का चरण प्रारंभ नहीं हो जाता तो वह समाज में अभिव्यक्त करता है।

需要

University Roll No. ....

★ बालक के जीवन में नाट्य व अभिनय की क्या भूमिका है अथवा सांस्कृतिक क्रियाएं किसे कहते हैं, इसका क्या महत्व है बताइये ?

बालक के जीवन में विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक क्रियाओं का विशेष महत्व है। सांस्कृतिक एक ऐसा माध्यम है जिससे कोई भी छात्र व शिक्षक बातों तथा तथ्यों को उचित व भली भाँति समझ सकता है।

अत: संस्कृति का हमारे जीवन में बहुत महत्व है, संस्कृति के बिना जीवन अधूरा है।

University Roll No. .....

Page No:....5.....

सांस्कृतिक क्रियाएँ :→

हमारे जीवन में सांस्कृतिक तथा साहित्यिक क्रियाओं का विशेष महत्व है। यह सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग है। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए सर्वांगीण विकास के लिए यह क्रियाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

नृत्य आदि क्रियाओं द्वारा मनुष्य की शारीरिक मांसपेशियों का व्यायाम ठीक प्रकार से होता है। जिससे बच्चों का स्वास्थ्य ठीक रहता है। शरीर में चुस्ती व फुर्ती मिलती है। नृत्य से मनोरंजन भी होता रहता है।

साहित्यिक क्रियाएँ :→ इसके अंतर्गत वाद - विवाद, भाषण, विचार विमर्श प्रश्नोत्तर आदि होते हैं।

सांस्कृतिक क्रियाओं का हमारे जीवन में महत्व :→

- ★ सांस्कृतिक क्रियाओं से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवम् नैतिक विकास होता है।
- ★ दमित इच्छाओं की पूर्ति होती है।
- ★ प्राचीन संस्कृति की सुरक्षा बनी रहती है।
- ★ समय का सदुपयोग होगा।

Creative Drama
Movement
Characterization
Self-awareness
Improvisation
Dramatization

सुझाव :-

1) इन क्रियाओं का चयन बच्चों की रुचि के अनुसार किया जाना चाहिए।

2) इन क्रियाओं के विकास के लिए बच्चों को स्कूल में समय देना चाहिए।

3) छात्रों को उनकी शारीरिक व मानसिक योग्यता व दक्षता के अनुसार क्रियाएँ करवानी चाहिए।

4) यदि बच्चे की रुचि न हो या उसको कोई शारीरिक समस्या हो तो बच्चे से जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए।

5) छात्राओं के खान-पान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

University Roll No. .... Page No: 16

मनोरंजनात्मक क्रियाएँ :→ वैज्ञानिक युग में मानव भौतिकवाद की तरह बढ़ता जा रहा है। भौतिक सुविधाओं के कारण मनुष्य के पास बहुत समय खाली हो गया है और मनुष्य अपना यह खाली समय व्यर्थ नहीं जाने देना चाहता है यह खाली समय अपने जीवन के व्यवस्थ करना चाहता है। दूसरे रूप में देखा जाए तो आधुनिकता की होड़ के कारण मनुष्य मानसिक तनाव के दौर में बढ़ता जा रहा है। मनुष्य अपनी मानसिक समस्या को दूर करने के लिए मनोरंजन क्रियाओं में रुचि रखना चाहता है।

अतः भौतिक सुविधाओं के कारण मनुष्य के पास अत्यधिक व्यर्थ समय हो गया है।

Ques :→ What is Drama?

Ans :– मनुष्य आदिकाल से ही प्रकृति का अनुकरण करता चला आ रहा है।
जैसे – मनुष्य की चेतना का विकास हुआ वैसे ही धीरे – 2 मनुष्य का अनुकरण होता गया।
अनुकरण की क्रिया के फलस्वरूप उसके दिमाग में विभिन्न प्रश्नों के पक्षों की कल्पना का समावेश भी होता गया।

परिणामस्वरूप मानव समाज में क्रम कांडों एवम् अन्य कार्यक्रम सम्मिलित करता चला गया।

उदाहरण के तौर पर ⇒

भारत में नाटक को तीनों लोकों में जो हो रहा है। उसका अनुकरण बताया है। लेकिन अनुकरण से उनका आशय इस संसार में जो कुछ वैसे ही हो रहा है उसे उसी रूप में उपस्थित करने से नहीं था।

अपितु उत्पन्न भ्रम के कारण था अर्थात् अंधेरे से प्रकाश की ओर अग्रसर होना बताया है।

University Roll No. .... Page No: 16

☆ **नाट्य धर्मी** :→

यदि किसी ग्रंथ या इतिहास आदि प्रसिद्ध कथा को कलात्मक परिवर्तन के साथ रंगमंच पर प्रस्तुत किये जाए वह नाट्य धर्मी अर्थात् जब तक अभिनेता एक भूमिका का निर्वाह करने के उपरांत पुनः दूसरी भूमिका को भी धारण कर सकते हो भी अभिनय के कौशल कहलाता है उसे नाट्य धर्मी कहते है।

यदि कोई अभिनेत्री वृद्ध भूमिका प्रस्तुत करे तो नाट्य धर्मी कहलाती है।

नाट्य धर्मी के अंतर्गत ग्रंथ व इतिहासों में परिवर्तन करके ही रंगमंच पर प्रस्तुत किये जाते है।

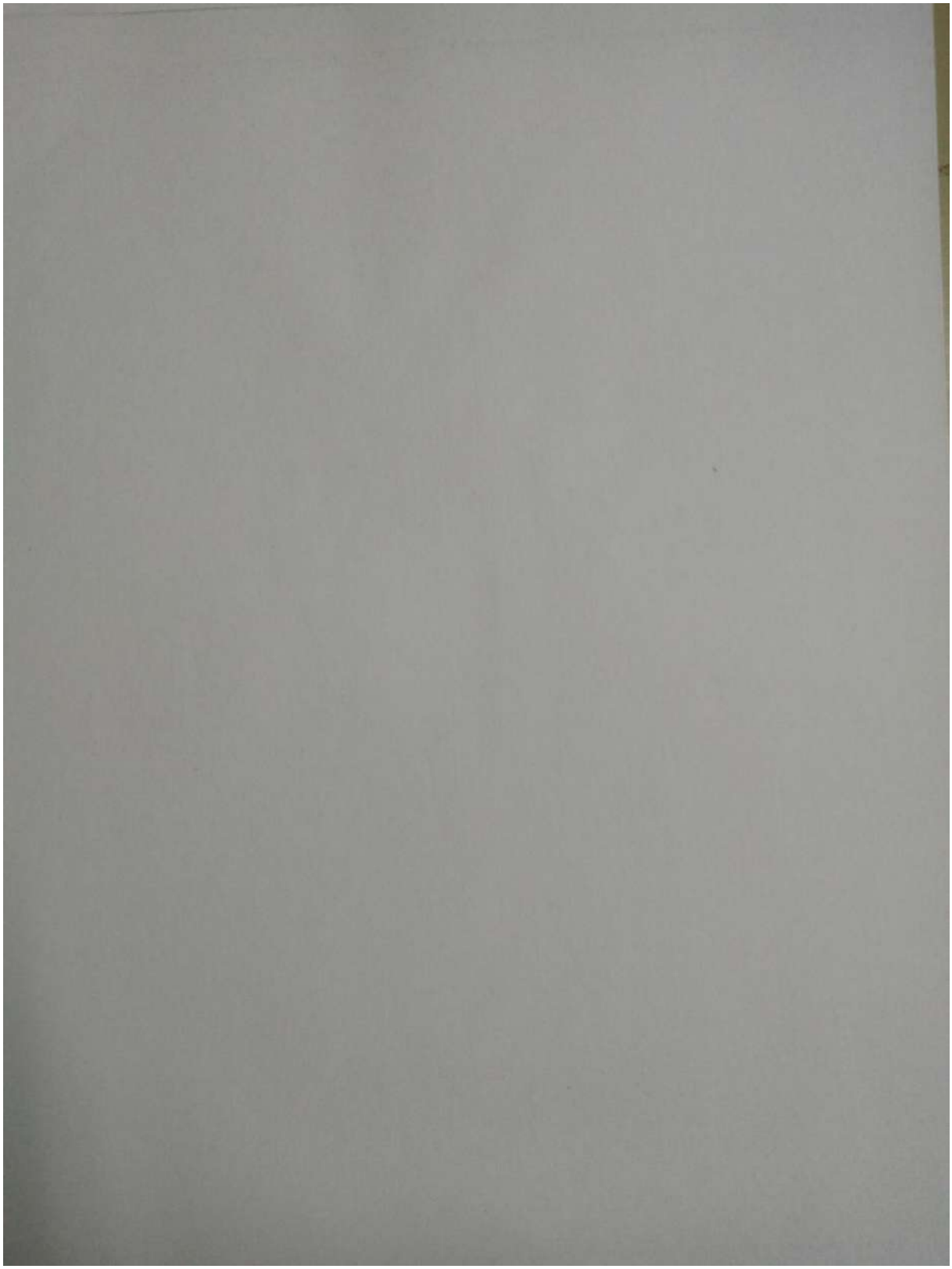

Drama की पाश्चात्य अवधारणा :-

पश्चिमी देशों में अभिनय के लिए Acting शब्द का प्रयोग होता है। जिसका मूल शब्द है Act और उसके कारण और अनुकरण दो अर्थ अभिनयकरण अर्थात् करने की भावना को लेकर कहा जाता है।

इस संसार में मानव जो जिंदगी भर भी करता रहता है वह Drama ही है। इसके द्वारा मनुष्य अपने जीवन में अत्यंत परिवर्तन लाता रहता है।

Creativity

उदाहरण के तौर पर :-

शाब्दिक अभिनय के विधान की संरचना के संबंध में एक विशेष प्रकार का शास्त्र है। जिसके अंतर्गत वाणी के विभिन्न स्वरूपों का विवेचन किया गया है।

अभिनेता को उसके सिद्धांतों का ज्ञान होना अति आवश्यक है। क्योंकि वह इस व्यवसाय में सर्वश्रेष्ठ कलाकार बन सकेगा।

जैसे – प्रार्थना, वर्णन आदि।

Darma के अंग :-

Darma के 5 अंग माने जाते है —

1. मुखमुद्रा :- हमारी सम्पूर्ण भावाभिव्यक्ति का प्रमुख साधन हमारे मुखमुद्रा या भाव भंगिमा है। हम बिना कुछ बोले अपना सिर ऊपर नीचे, बाये - दाये, इधर - उधर घुमाकर, नीचे झुकाकर अपनी गर्दन नीचे - ऊपर करके विभिन्न प्रकार का नेत्र था।

बाँहे चढ़ाकर अनेक प्रकार के भाव उत्पन्न होते है।

University Roll No. .... Page No. ....

शरीर - भंगिमा :→ जिस प्रकार मुखमंडल के विभिन्न अंगों में विकास अर्थात् परिवर्तन लाकर भावों की अभिव्यक्ति की जाती है इसे शारीरिक - भंगिमा कहते हैं।

गति :→ Drama में सबसे महत्वपूर्ण प्रधान गति का ही होता है।

Drama प्रत्येक पात्र की भूमिका में करने वाले अभिनेता को विभिन्न गतियों में चलना आवश्यक होता है।

DRAMA
Creative Confidence
HOUSTON ART CAR PARADE
2015

University Roll No. ....

4. वाणी :- यूरोपीय नाट्य विद्वानों का मत है कि अभिनेता को अपनी वाणी पूरा अधिकार होना चाहिए। अभिनेता को उसे मंद से तार के साथ प्रयुक्त करने की योग्यता रखनी चाहिए।

5. वेग :- Drama के लिए वेग का भी बड़ा महत्व है वेग का अर्थ इन उदाहरणों के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है।

Page No. 21

Date

Ques अभिनय की विभिन्न शैलियाँ :→

Ans 1. यथार्थवादी शैली
2. गैर यथार्थवादी शैली

* यथार्थवादी शैली :→ यथार्थवादी शैली Drama में जीवन को यथावत् प्रस्तुत किया जाता है अर्थात् Drama को भी मंच पर वास्तविकता का दर्पण चित्र भी प्रस्तुत करना होता है, इस अभिनय शैली की विस्तृत व्याख्या जो स्वयं इसे अभ्यास में लाने की विधि है।

* गैर यथार्थवादी Drama :→ गैर अपनी आरंभिक अवस्था में Drama का मुख्य उद्देश्य तथ्य पर दर्शकों को किसी भी प्रकार से विश्वास दिलाना हुआ करता था। तथ्य भी अधिकतर यथार्थ जीवन से परे हुआ करती थी जिनमें जादुई चमक दमक तथा अविश्वसनीय क्रियाओं की मुख्य भूमिका होती है। इसमें छंदों का प्रयोग प्रारंभ हुआ था।

Assignment No. .....Roll No. .....Dated.....

:→ Drama का इतिहास

बहुत प्राचीन है। कलात्मक ढंग संचालन द्वारा भावों की अभिव्यक्ति Drama कहलाती है।

संपूर्ण धरती हमारे लिए एक रंग - मंच है।

:→ Mono Acting Drama

कलाकारी का एक भाग है। जिस प्रकार साहित्य में वर्णमाला का विशेष महत्व होता है उसी प्रकार Mono Acting को विशेष स्थान प्राप्त है।

Assignment No. .....Roll No. .....Dated.....

भारत में नृत्य की जड़ें प्राचीन परंपराओं में हैं। इस विशाल उपमहाद्वीप में नृत्यों की विभिन्न विधाओं ने जन्म लिया है। प्रत्येक विधा ने विशिष्ट समय व वातावरण के प्रभाव से आकार लिया है। राष्ट्र शास्त्रीय नृत्य की कई विधाओं को पेश करता है, जिनमें से प्रत्येक का संबंध देश के विभिन्न भागों से है। प्रत्येक विधा किसी विशिष्ट क्षेत्र अथवा व्यक्तियों के समूह के लोकाचार का प्रतिनिधित्व करती है।

भारत के कुछ प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य हैं:-

★ भरतनाट्यम् :→ इस नृत्य की खास विशेषताएं, नायक - नायिका प्रसंग पर आधारित पद्म अथवा कविताएँ हैं।

भरत नाट्यम, भारत के प्रसिद्ध नृत्यों में से एक है तथा इसका संबंध दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य से है। यह नाम "भरत" शब्द से लिया गया तथा इसका संबंध नृत्यशास्त्र से है।

ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मा, हिंदू देवकुल के महान त्रिदेवों में से प्रथम, नाट्य शास्त्र अथवा नृत्य विज्ञान है। इन्द्र व स्वर्ग के अन्य देवताओं के अनुनय - विनय से ब्रह्मा इतना प्रभावित हुआ कि उसने नृत्य

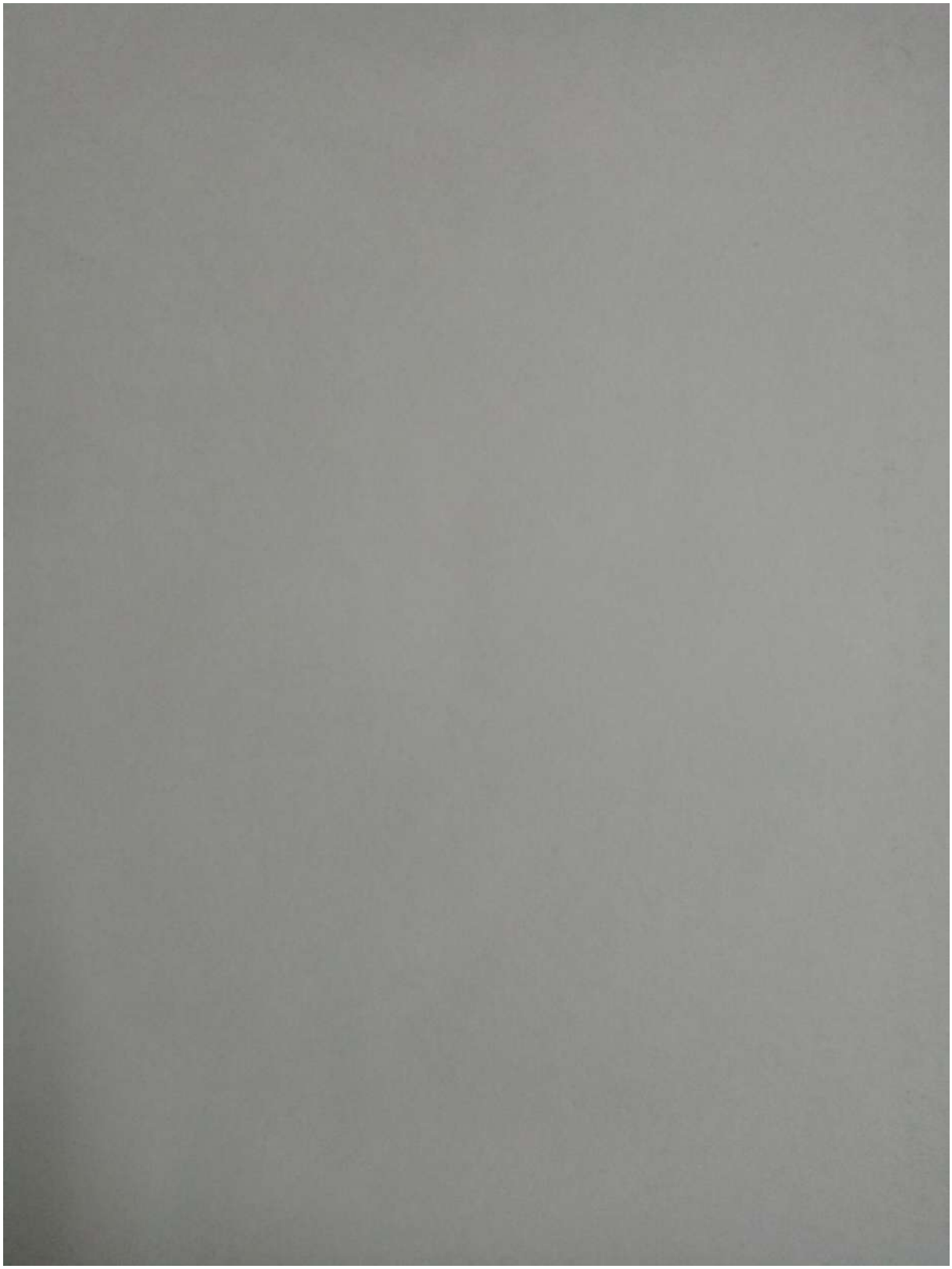

वेद स्थापित करने के लिए चारों वेदों का उपयोग किया। नाट्य वेद अथवा पंचम वेद भरत व उनके अनुयाइयों को प्रदान किया गया। भरतनाट्यम के कुछ प्रमुख कलाकार लीला सैमसन, मृणालिनी साराभाई इनका अभी निधन हुआ।

★ **कथकली** :→ केरल के दक्षिण - पश्चिमी राज्य का एक समृद्ध और फलने - फूलने वाला नृत्य कथकली यहां की परम्परा है। कथकली का अर्थ है एक कथा का नाट्य या नृत्य नाटिका। कथा का अर्थ है कहानी, यहां अभिनेता रामायण और महाभारत के महाग्रंथों और पुराणों से लिए गए चरित्रों को अभिनय करते है। यह अत्यंत रंग बिरंगा नृत्य है।

★ **कथक** :→ कथक का नृत्य रूप 100 से अधिक घुंघरूओं को पैरों में बांध कर तालबद्ध पद-चाप, विहंगम चक्कर द्वारा पहचाना जाता है। और हिन्दु धार्मिक कथाओं के अलावा पर्शियन और उर्दू कविता से ली गई विषयवस्तुओं का नाटकीय प्रस्तुतीकरण किया जाता है। कथक का जन्म उत्तर में हुआ किंतु पर्शियन और मुस्लिम प्रभाव से यह मंदिर की रीति से दरबारी मनोरंजन तक पहुँच गया।

Kamal Paper Products
Signature

Assignment No. .... Roll No. .... Dated ....

★ **ओडिसी** :- ओडिसी को पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर सबसे पुराने जीवित नृत्यों रूपों में से एक माना जाता है। ओडिसा के पारम्परिक नृत्य, ओडिसी का जन्म मंदिर में नृत्य करने वाले देवदासियों के नृत्य से हुआ था। ओडिसी का नृत्य का उल्लेख शिला लेखों में मिलता है, जो ब्रह्मेश्वर मंदिर के शिला लेखों में दर्शाया गया है साथ ही कोणार्क के सूर्य मंदिर के केंद्रीय कक्ष में इसका उल्लेख मिलता है।

★ **मणिपुरी** :- पूर्वोत्तर के मणिपुर क्षेत्र से आया शास्त्रीय नृत्य मणिपुरी नृत्य है। मणिपुरी नृत्य भारत के अन्य नृत्य रूपों से भिन्न है। इसमें शरीर धीमी गति से चलता है, सांकेतिक भव्यता और मनमोहक गति से भुजाएँ अंगुलियों तक प्रवाहित होती है।

★ **मोहिनी अट्टम** :- यह केरल की महिलाओं द्वारा किया जाने वाला अर्ध शास्त्रीय नृत्य है जो कथकली से अधिक पुराना माना जाता है। साहित्यिक रूप से नृत्य के बीच मुख्य माना जाने वाला जादुई मोहिनीअट्टम केरल के मंदिरों में प्रमुखतः किया जाता था। यह देवदासी नृत्य विरासत

Signature

Assignment No. .... Roll No. .... Dated............

का उत्तराधिकारी भी माना जाता है जैसे कि भरतनाट्यम, कुचीपुड़ी और ओडिसी।

★ **कुचिपुड़ी** :- कुचीपुड़ी आंध्र प्रदेश की एक स्वदेशी नृत्य शैली है जिसने इसी नाम के गाँव में जन्म लिया और पनपी, इसका मूल नाम कुचेलापुरी या कुचेलापुरम था, जो कृष्णा जिले का एक कस्बा है।

★ **कुटियाट्टम** :- कुटियाट्टम केरल के शास्त्रीय रंग मंच का अद्वितीय रूप है जो अत्यंत मनमोहक है। यह 2000 वर्ष पहले के समय से किया जाता था और यह संस्कृत के नाटकों का अभिनय है और यह भारत का सबसे पुराना रंग मंच है, जिसे निरंतर प्रदर्शित किया जाता है।

राजा कुल शेखर - वर्मन ने 10 वीं शताब्दी ए॰ डी॰ में कुटियाट्टम में सुधार किया और रूप संस्कृत में प्रदर्शन की परम्परा को जारी रखे हुए है। प्राकृत भाषा और मलयालम अपने प्राचीन रूपों में इसे माध्यम को जीवित रखे है। इस भण्डार में भास, हर्ष और महेन्द्र विक्रम पल्लव द्वारा लिखे गए नाटक शामिल है।

Kamal Paper Products — Signature

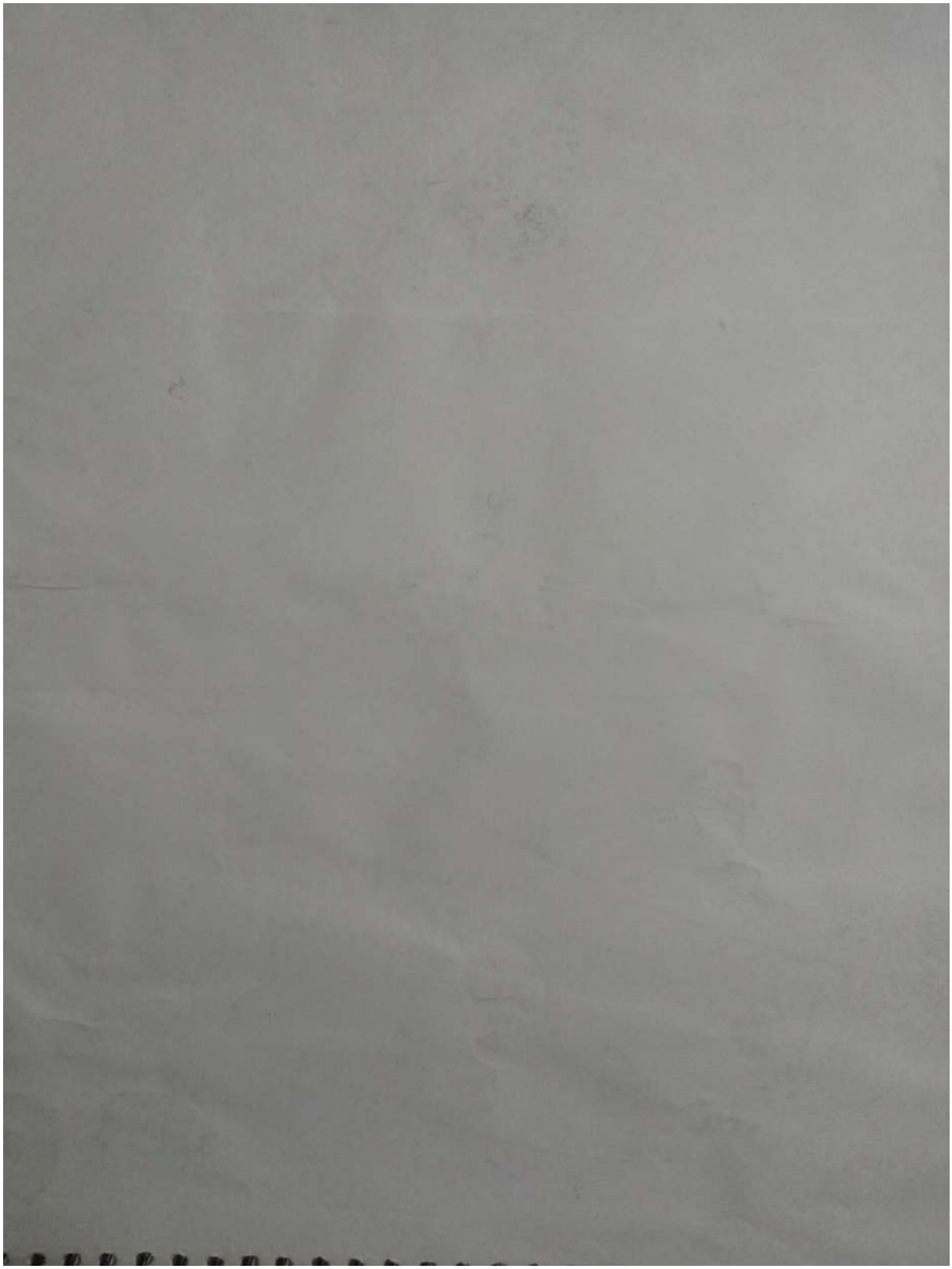

Assignment No. .....Roll No. .....Dated.....

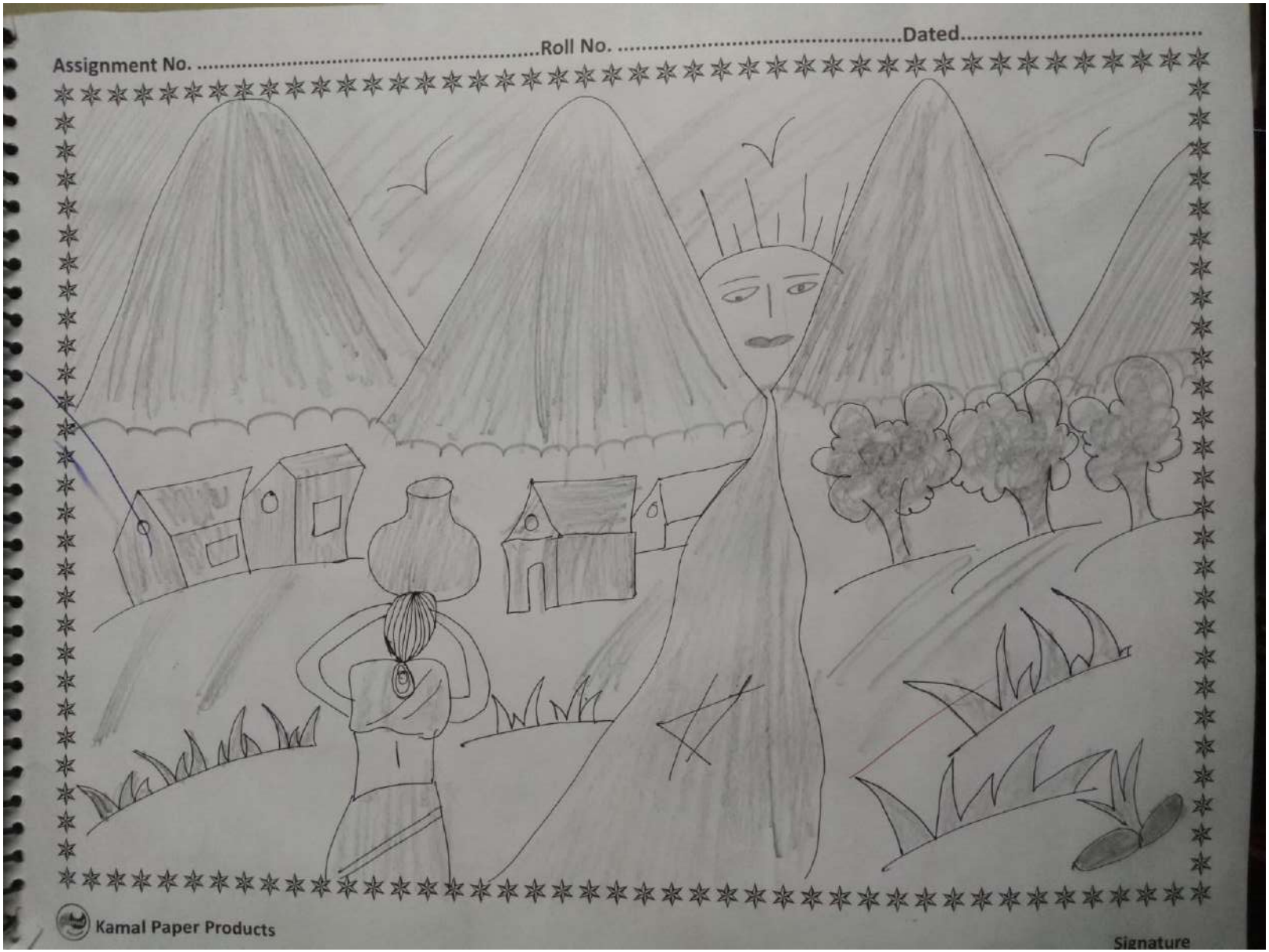

Kamal Paper Products

Signature

Assignment No. .....Roll No. .....Dated.....

Kamal Paper Products

Signature

Assignment No. ....Roll No. .....Dated.....

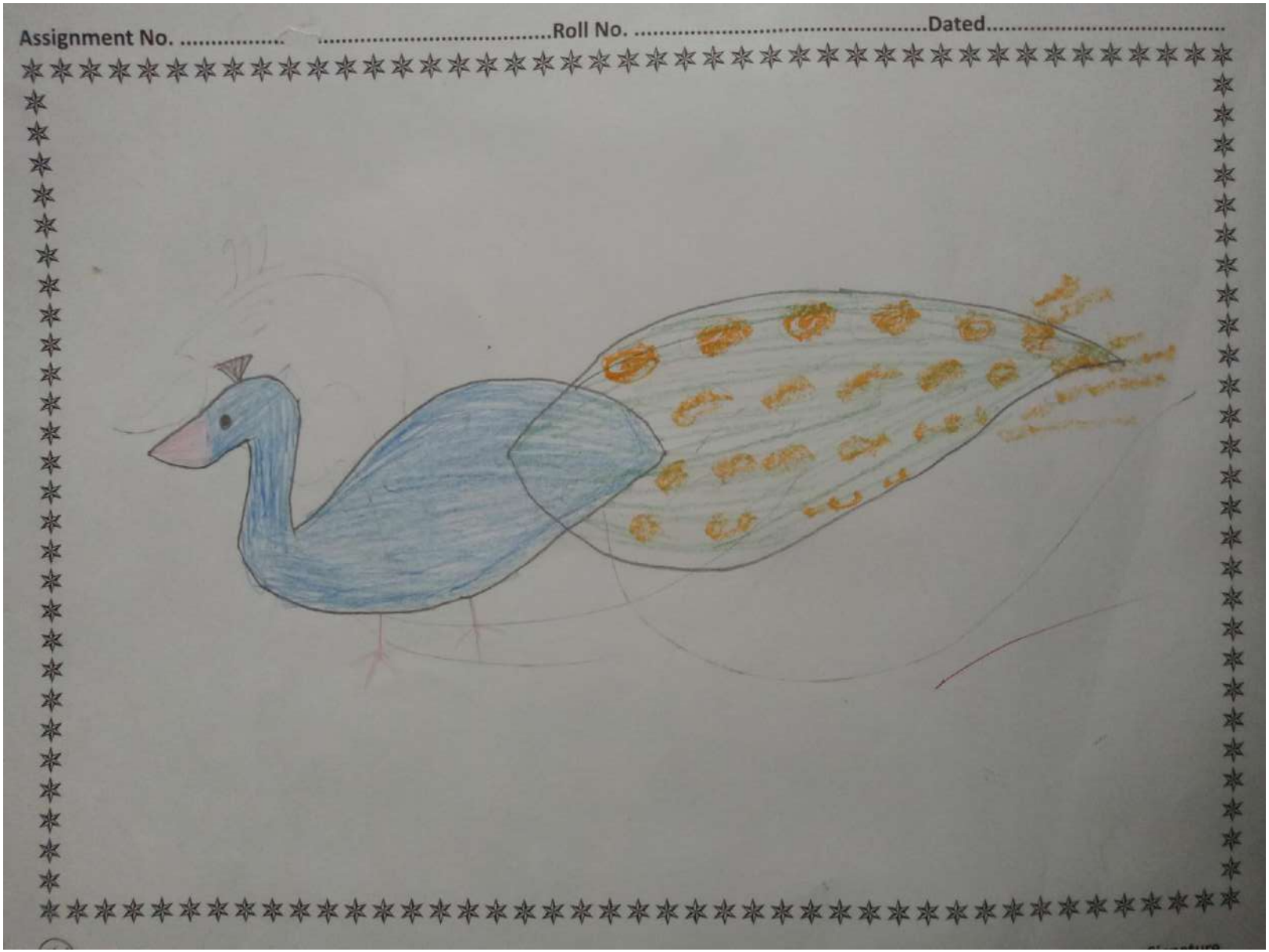

Assignment No. .....

Kamal Paper Products

Signature

Assignment No. .....Roll No. .....

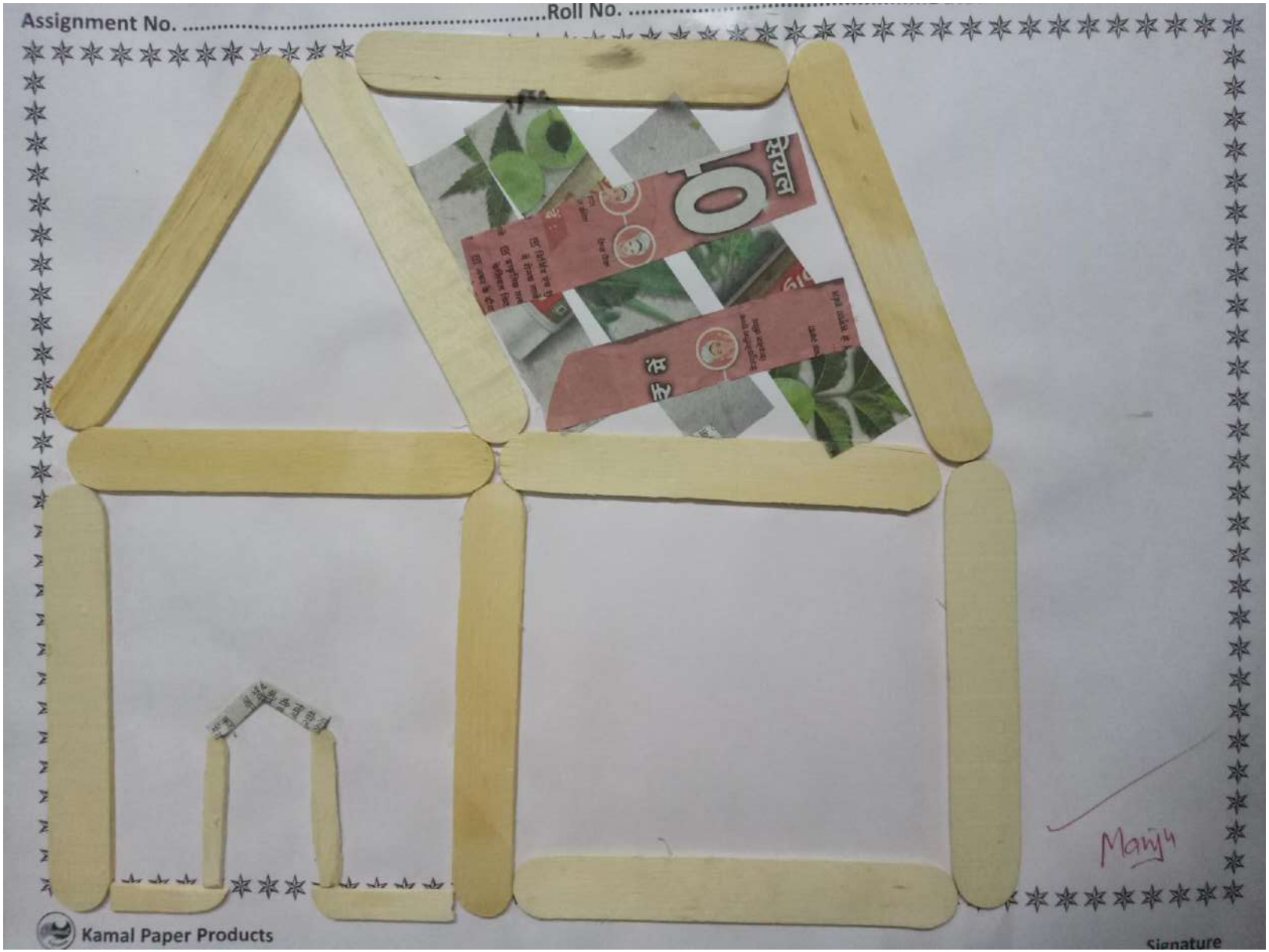

Kamal Paper Products

Signature

Page No.....25.........

University Roll No.................................

University Roll No.....

Kamal Paper Products

University Roll No.....

ROCKET

[SILVER FOIL AND STAR PASTING]

Paste silver foil (provided) on the rocket and stars in the space.

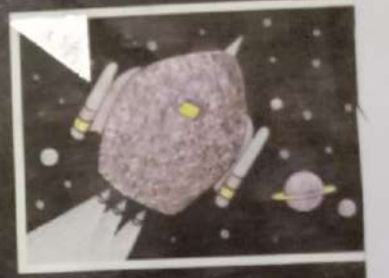

University Roll No.....

Page No..................

University Roll No..................................

Kamal Paper Products

University Roll No.....

STENCIL ART

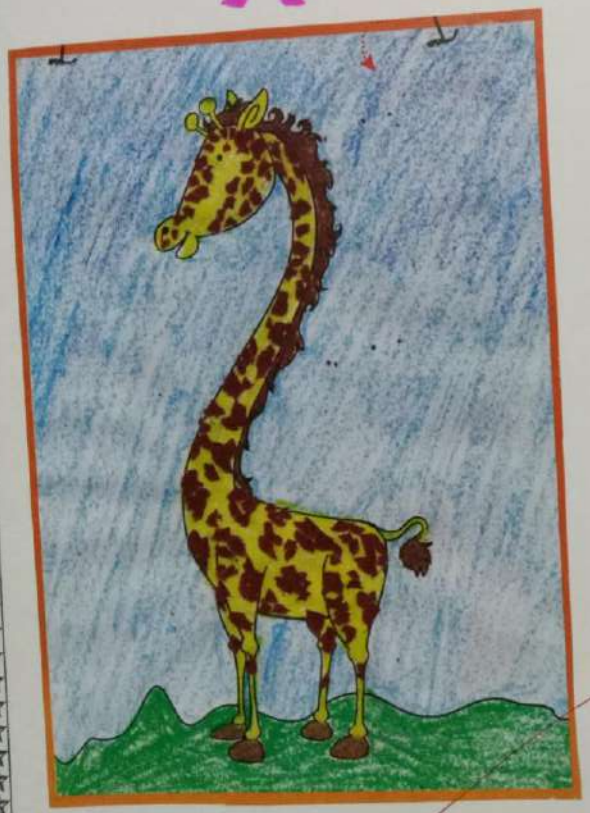

Kamal Paper Product

University Roll No.....

PASTEL ART

Kamal Paper Products

Page No......

University Roll No..................................

(2)

COLLAGE ART

University Roll No.....

STIPPLING ART

Good

PRIMARY AND SECONDARY COLOURS

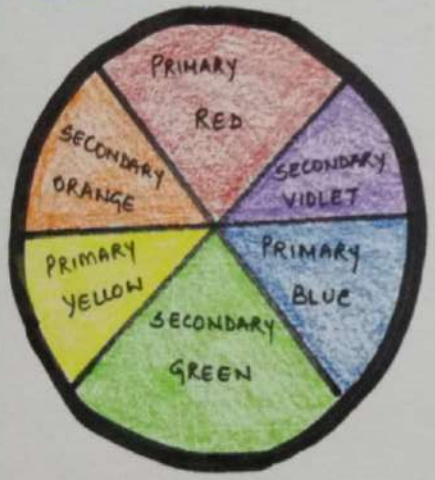

STICK ART

GRAPES

FLOWER